

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 2, संस्कृति भाषा शैली

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

पिछले व्याख्यान में, हमने देखा कि हेर्मेनेयुटिक्स क्या है और व्याख्या क्या है, जब हम ऐसा करते हैं तो हम क्या कर रहे हैं, और यह भी कि बाधाएँ या दूरियाँ क्या हैं, अंतराल क्या हैं जो हेर्मेनेयुटिक्स की आवश्यकता होती है। हमने कहा कि हालाँकि बहुत से लोग बस बैठकर बाइबिल का पाठ पढ़ना पसंद करेंगे, लेकिन यह भी, जैसा कि मैंने कहा है, व्याख्याशास्त्र के बारे में धारणाओं को प्रकट करता है। लेकिन वह उस दूरी से भी अनजान है जो गलतफहमी पैदा कर सकती है, और हेर्मेनेयुटिक्स हमें उस दूरी को दूर करने की अनुमति देता है।

इस सत्र में मैं जिस बारे में बात करना चाहता हूँ वह उस बाइबिल के चरित्र या उस धारणा के बारे में है जो हम बाइबल की व्याख्या करते हैं। जब हम पुराने और नए नियम की व्याख्या की बात करते हैं तो हम क्या व्याख्या करते हैं? बाइबल के बारे में कौन सी धारणाएँ हमारे व्याख्याशास्त्र को प्रभावित करती हैं? और इसलिए मैं उस साहित्य के चरित्र को देखना चाहता हूँ जिसकी हम व्याख्या कर रहे हैं और यह पुराने और नए नियम की व्याख्या करने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित कर सकता है। धार्मिक दृष्टि से, हम बाइबल को कैसे समझते हैं इसका वर्णन करने के लिए प्रेरणा शब्द एक महत्वपूर्ण शब्द है।

मूलतः, जब हम कहते हैं कि बाइबल प्रेरित है, तो वह शब्द स्वयं विभिन्न प्रकार की समझ उत्पन्न कर सकता है। उन सभी में जो समानता है वह प्रेरणा है, इसका सीधा सा मतलब है कि बाइबल का धार्मिक साहित्य से, स्वयं ईश्वर से कुछ संबंध है। ईश्वर और बाइबिल के बीच एक संबंध है।

प्रश्न यह है कि हम उस संबंध को कैसे समझते हैं। जब हम कहते हैं कि बाइबल प्रेरित है, यह एक साहित्य है जो ईश्वर का वचन होने का दावा करता है तो हमारा क्या मतलब है? फिर से हमारा इससे क्या तात्पर्य है, और यह पुराने और नए नियम को पढ़ने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित करता है? जब हम कहते हैं कि बाइबल प्रेरित है तो हमारा क्या मतलब है? अपने धार्मिक अर्थ में, अपने पूर्ण धार्मिक अर्थ में, बाइबल की उत्पत्ति मनुष्यों के साथ-साथ स्वयं ईश्वर के कारण हुई है।

और मुद्दे का एक हिस्सा यह है कि हम बाइबल को एक पूर्णतः मानवीय दस्तावेज़ के रूप में कैसे समझते हैं जो इसके पूर्ण मानवीय आयाम और इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि यह मनुष्यों द्वारा निर्मित है, लेकिन फिर भी यह किसी से कम नहीं होने का दावा करता है भगवान का ही शब्द.

हम इसे कैसे समझें? वास्तव में, इसके बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन मैं अपनी अधिकांश टिप्पणियाँ इस मुद्दे तक ही सीमित रखना चाहता हूँ कि यह हमारे व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है। लेकिन मैं बाइबिल के पाठ को ही देखना चाहता हूँ और प्रेरणा से हमारा क्या मतलब है इसे समझने में केवल दो कारकों की जांच करना चाहता हूँ, जिन्हें तब ध्यान में रखा जाना चाहिए जब हम पुराने और नए नियम के पाठ को प्रेरित साहित्य मानते हैं। और जाहिर है, यही वह चीज़ है जो व्याख्याशास्त्र और व्याख्या के संदर्भ में सोचती है, यही वह चीज़ है जो बाइबिल को मानव संचार के अन्य रूपों और संचार के अन्य रूपों से अलग करती है जिनकी हम व्याख्या करेंगे।

बाइबल को प्रेरित कहकर, हम मानते हैं कि यह धार्मिक साहित्य है जिसे अलग रखा गया है। यह एक तरह से ईश्वर का शब्द है और हम इसी का अन्वेषण करना चाहते हैं। लेकिन जब हम पुराने और नए नियम को प्रेरित साहित्य या ईश्वर के शब्द के रूप में सोचते हैं तो दो कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

पहला स्वयं बाइबल के बारे में कथन है। दूसरी घटना है, वह परिघटना जिसे आप वास्तव में बाइबिल पाठ में पाते हैं। हम पाठ में क्या चल रहा पाते हैं? साथ ही, फिर से, पहला सवाल यह है कि बाइबल अपने बारे में क्या कहती है, जहाँ तक वह क्या है? लेकिन फिर जब हम पाठ के विवरणों की जांच करना शुरू करते हैं तो हमें पाठ में कौन सी घटनाएँ मिलती हैं? दो शायद सबसे महत्वपूर्ण कथन, कम से कम जब आप प्रेरणा के उपचार पढ़ना शुरू करते हैं, तो दो पाठ जो प्रेरणा की बात आने पर हमेशा क्लासिक पाठ की तरह सामने आते हैं, दोनों ही न्यू टेस्टामेंट में पाए जाते हैं, हालांकि कई नए हैं टेस्टामेंट, पुराने टेस्टामेंट के ग्रंथ और साथ ही जो इसके चरित्र की पुष्टि करते हैं।

और मैं विशेष रूप से बहुत सारे भविष्यवाणी साहित्य के बारे में सोचता हूँ जहाँ यह स्पष्ट है कि भविष्यवक्ता जानबूझकर लोगों को भगवान के वचन बोलने का दावा कर रहे हैं। लेकिन दो अंश, पहला पॉलीन साहित्य में पाया जाता है, और वह है 1 तीमुथियुस अध्याय 2। और 1 तीमुथियुस अध्याय 3, मुझे क्षमा करें, 1 तीमुथियुस अध्याय 3 और पद 16। क्षमा करें, 2 तीमुथियुस अध्याय 3 और पद 16 .

पॉल तीमुथियुस को निर्देश देते हुए कहते हैं, सभी धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा रचित हैं। और वह शब्द ईश्वर-प्रवास वह है जिससे धार्मिक रूप से हमें प्रेरणा शब्द मिलता है। और कुछ सवाल है कि शायद पॉल ने यह शब्द स्वयं दो ग्रीक शब्दों से बनाया है जो मूल रूप से ईश्वर द्वारा रचित इस अनुवाद से मिलते जुलते हैं।

लेकिन हम उस पर बाद में एक क्षण में गौर करेंगे। परन्तु सभी धर्मग्रन्थ ईश्वर-प्रेरित हैं और उपदेश, फटकार, सुधार, प्रशिक्षण और धर्म के लिए लाभदायक हैं। और फिर पद 17, ताकि परमेश्वर का व्यक्ति हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह तैयार हो सके।

तो 1 तीमुथियुस अध्याय 3, 16, हम इसे बाद में देखेंगे। हालाँकि मुख्य रूप से पॉल ग्रंथों के संग्रह को ईश्वर के वचन के रूप में संदर्भित कर रहा है जो उसके और उसके पाठकों के लिए उपलब्ध होगा, मुख्य रूप से पुराने नियम में। हालाँकि मुझे लगता है कि आप एक अच्छा मामला बना सकते हैं कि पॉल इसमें सुसमाचार भी शामिल कर सकता है।

यदि नहीं, तो जाहिर तौर पर उनके अपने पत्र और अन्य नए नियम के दस्तावेज़। पॉल मुख्य रूप से संभवतः पुराने नियम का जिक्र कर रहा है, लेकिन स्पष्ट रूप से इसे देखता है, और अगर मैं इस पाठ को सही ढंग से समझता हूँ, तो वह पुराने नियम की संपूर्णता, धर्मग्रंथ की संपूर्णता को भगवान की सांस के उत्पाद से कम कुछ भी शामिल नहीं कर रहा है। , भगवान की वाणी का। तो यह पाठ पुराने नियम की संपूर्णता के बारे में एक महत्वपूर्ण प्रकार का मेटा-स्टेटमेंट है।

और फिर, यह संभव है कि जब आप इस पाठ के पहले और बाद में पढ़ते हैं, तो पॉल इसमें वह सुसमाचार भी शामिल कर सकता है जिसका वह प्रचार करता है और साथ ही वह भी जिसमें पुराना नियम गवाही देता है। लेकिन स्पष्ट रूप से इस तरह के मेटा-स्टेटमेंट में पॉल अपने लिए उपलब्ध संपूर्ण धर्मग्रंथ को ईश्वर की सांस, ईश्वर के शब्द का उत्पाद मानने से कम कुछ नहीं देखेगा। नए नियम में दूसरा पाठ जो बाइबिल के स्वयं के दृष्टिकोण को स्थापित करने में प्रमुख है, फिर से एक मेटा-स्टेटमेंट की तरह है जो लेखक के लिए उपलब्ध संपूर्ण धर्मग्रंथ को संपूर्ण रूप से शामिल करता है, 2 पीटर और अध्याय में पाया जाता है 1 और श्लोक 20.

और मैं फिर से श्लोक 19 भी पढ़ूंगा। और श्लोक 19 से शुरू करते हुए, हमने भविष्यवक्ताओं के वचन को और अधिक निश्चित कर दिया है, और आपके लिए अच्छा होगा कि आप इस पर ध्यान दें, जैसे कि एक अंधेरी जगह पर प्रकाश तब तक चमकता रहता है जब तक कि दिन नहीं निकलता और सुबह का तारा आपके दिलों में नहीं चमकता। श्लोक 20, सबसे पहले, आपको यह समझना चाहिए कि धर्मग्रंथ की कोई भी भविष्यवाणी भविष्यवक्ता की अपनी व्याख्या से नहीं हुई है।

भविष्यवाणी के लिए, श्लोक 21, भविष्यवाणी की उत्पत्ति कभी भी मनुष्य की इच्छा से नहीं हुई थी, बल्कि मनुष्य परमेश्वर की ओर से बोलते थे क्योंकि वे पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होते थे। और हम बाद में बहुत संक्षेप में इस पाठ पर लौटेंगे। फिर, इस पाठ की कुछ सीमाएँ हो सकती हैं क्योंकि लेखक मुख्य रूप से भविष्यसूचक पाठों का उल्लेख कर रहा है, लेकिन स्पष्ट रूप से भविष्यसूचक पाठों के लिए, वह उन्हें ईश्वर की आत्मा के एक उत्पाद के रूप में देखता है जो व्यक्तियों को अपने लोगों के लिए ईश्वर के शब्द बोलने के लिए प्रेरित करता है। .

तो ये दो कथन तथ्य को स्थापित करते हैं, फिर से एक तरह के मेटा-स्टेटमेंट जो धर्मग्रंथ से परे हैं, इस तथ्य को स्थापित करते हैं कि पॉल और पीटर, ये दो लेखक, पुराने नियम को देखते हैं और इसे भगवान के भाषण के उत्पाद से कम नहीं देखते हैं, इसे उत्पन्न करने के लिए मनुष्य के जीवन में काम करने वाली भगवान की आत्मा की दिव्य गतिविधि का परिणाम है। तो यह मुख्य रूप से इन दो ग्रंथों से है कि हमें प्रेरणा की समझ मिलती है, बाइबिल के ग्रंथों को भगवान के भाषण के

उत्पाद के रूप में देखा जाना चाहिए, भगवान की दिव्य गतिविधि के उत्पाद के रूप में काम करना और व्यक्तियों को बोलने के लिए प्रेरित करना जो कि इससे कम नहीं है परमेश्वर का वचन। फिर भी, हमें न केवल बाइबिल पाठ के कथनों को देखने की जरूरत है, और यह अपने बारे में क्या कहता है, बल्कि बाइबिल की घटनाओं को भी देखने की जरूरत है, हम वास्तव में बाइबिल पाठ में क्या पाते हैं? और फिर, मैं कुछ विवरणों का एक दर्दनाक संक्षिप्त सर्वेक्षण दूंगा, या जो हम पाठ में पाते हैं, उसे ध्यान में रखना होगा जब हम समझते हैं कि जब हम बाइबिल से प्रेरित कहते हैं तो हमारा क्या मतलब है, और यह हमारे बाइबिल पाठ को पढ़ने और व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है।

पहली चीज़ जो हमें मिलती है, मैं फिर से कुछ मुट्ठी भर चीज़ों को सूचीबद्ध करने और कुछ बहुत संक्षिप्त उदाहरण देने जा रहा हूँ। पहली चीज़ जो हम अक्सर बाइबिल के पाठ में पाते हैं वह यह है कि ईश्वर सीधे मनुष्यों से, मानव लेखकों से बात कर रहा है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भविष्यवाणी साहित्य है, और आप भविष्यवाणी पाठ में उस सूत्र को दोहराते हुए पाते हैं, प्रभु का वचन यशायाह भविष्यवक्ता के पास आया, या प्रभु का वचन येहेजकेल के पास आया, या प्रभु का वचन आया जो भी, और फिर अक्सर प्रभु इस प्रकार कहते हैं, एक भविष्यवाणी भाषण सूत्र।

ऐसा प्रतीत होता है कि कम से कम, भविष्यवक्ता जो कुछ भी कर रहे हैं, वे इस बात से अवगत प्रतीत होते हैं कि वे जो बोल रहे हैं वह ईश्वर द्वारा सीधे उनसे या उनके माध्यम से बात करने के परिणाम से कम नहीं है। अक्सर कुछ धर्मशास्त्रीय पाठ्यपुस्तकों में आप भविष्यवक्ताओं को ईश्वर के मुखपत्र, या उसके जैसा कुछ के रूप में वर्णित पाते हैं। लेकिन भविष्यवाणी पाठ जैसे एक पाठ जहां भविष्यवक्ताओं को पता है कि भगवान के शब्द उनके पास आ रहे हैं, और इस प्रकार भगवान कहते हैं, वे एक संदेश की घोषणा करने के बारे में जानते हैं जो भगवान द्वारा सीधे उनसे बात करने का परिणाम है।

या आप डेकलॉग के पुराने नियम में सोचते हैं कि ईश्वर स्वयं लिखता है और अपने लोगों को देता है। या डैनियल या रहस्योद्घाटन जैसी पुस्तक, जहां दो सर्वनाश कार्य हैं जहां भगवान, विशेष रूप से रहस्योद्घाटन, जहां पहले में, रहस्योद्घाटन अध्याय एक की पहली कविता, अपनी

पुस्तक के प्रस्तावना की तरह, जॉन अपनी पुस्तक को यीशु के रहस्योद्घाटन के रूप में लेबल करता है मसीह. और मुझे विश्वास है कि यीशु मसीह ही रहस्योद्घाटन का स्रोत है, जो रहस्योद्घाटन दे रहा है।

लेकिन ध्यान दें कि वह यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन कहता है, यह वह रहस्योद्घाटन है जो यीशु मसीह से आता है जिसे भगवान ने उसे अपने पैगम्बरों को दिखाने के लिए दिया था। तो अंततः जॉन का दावा है, फिर से वह प्रकाशितवाक्य में जो कुछ भी कर रहा है, अंततः जॉन का दावा है कि यह मसीह की रहस्योद्घाटन गतिविधि और अंततः जॉन के लिए स्वयं भगवान के परिणाम से कम नहीं है। इसलिए पुराने नए नियम के कई ग्रंथों में, विशेष रूप से भविष्यवाणी प्रकार के पाठों में, हम लेखकों को एक संदेश रिकॉर्ड करते हुए पाते हैं कि भगवान सीधे मानव लेखक से बात करते हैं।

पाठ का एक और दिलचस्प प्रकार यह है कि आपके पास कुछ स्थान हैं जहां मानव शब्द, ऐसे शब्द जो स्पष्ट रूप से मनुष्यों द्वारा बोले और लिखे गए हैं, इस बात से अनजान हैं कि वे अपने शब्दों को लिखने के अलावा कुछ और कर रहे हैं, बाद के लेखकों द्वारा अक्सर भगवान के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। बस आपको एक उदाहरण देने के लिए, उत्पत्ति अध्याय 2 और श्लोक 24 में, मैं पुराने नियम के उदाहरणों का उपयोग करने में थोड़ा असहज हूं क्योंकि मेरे पास एक पुराने नियम का विद्वान है जो यह सब वीडियो बना रहा है और इसलिए, अगर उसका सिर हिलने लगे, तो नहीं, मुझे पता है कि मैं मैं गलत रास्ते पर हूं. उत्पत्ति अध्याय 2 और पद 24, एक अंश जिसे बाद में नए नियम में भी कुछ बार उठाया गया।

लेकिन अध्याय 2 और श्लोक 24 में, इस कारण से, उत्पत्ति 1 और 2 के अंत में, अलग-अलग दृष्टिकोण से सृष्टि के दो विवरण हैं, अध्याय 2 के विवरण के अंत में लेखक यह कहकर समाप्त करता है, इस कारण से, मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन होंगे। दिलचस्प बात यह है कि कई टिप्पणियाँ यह सोचती हैं कि इसे ही अक्सर व्याख्यात्मक कहा जाता है। यानी यह एक तरह से लेखक की अपनी टिप्पणी है।

आधुनिक समय में, हम इसे कोष्ठक में या फुटनोट या कुछ और में रख सकते हैं। यह एक तरह से एक तरफ या एक टिप्पणी है कि जैसे लेखक कुछ बता रहा है, वैसे, आपको समझने में मदद करने के लिए मुझे यह टिप्पणी करने दीजिए। तो यह संभवतः लेखक की अपनी व्याख्यात्मक टिप्पणी है, बाइबिल पाठ पर उसकी अपनी कथा है।

ये उनके अपने शब्द हैं, अब तक उन्होंने जो लिखा है उसका उनका अपना मूल्यांकन है। लेकिन यह दिलचस्प है, जब यीशु स्वयं फरीसियों के साथ अपनी बहस में मैथ्यू अध्याय 19 में इस पाठ को उठाते हैं, तो फरीसी उनके पास आते हैं और कहते हैं, क्या किसी व्यक्ति के लिए किसी भी कारण से अपनी पत्नी को तलाक देना वैध है? और श्लोक 4 और 5 में, यीशु इस पाठ को उद्धृत करके उत्तर देते हैं। लेकिन ध्यान दें कि वह इसका परिचय कैसे देता है।

यीशु कहते हैं, क्या तुम ने नहीं सुना, उस ने उत्तर दिया, कि आरम्भ में सृष्टिकर्ता ने, जो स्वयं परमेश्वर की ओर संकेत करता है, उन्हें नर और नारी बनाया और कहा, इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा। और दोनों एक तन हो जायेंगे। जाहिर है, यीशु ने सोचा कि ईश्वर स्वयं जिम्मेदार था। इन शब्दों को कहने के लिए निर्माता जिम्मेदार था।

और इसके कुछ अन्य उदाहरण भी हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह मानवीय शब्दों और उत्पत्ति 2 के उनके मूल संदर्भ का एक बहुत ही सीधा उदाहरण है, जिसका श्रेय अब निर्माता, स्वयं ईश्वर को दिया जा रहा है। तो ऐसे स्थान हैं जहां भगवान सीधे अपने मानव लेखकों से बात करते हैं और वे जो कहते हैं उसे रिकॉर्ड करते प्रतीत होते हैं।

अन्य स्थान भी हैं, कुछ स्थान जहां मानव लेखक कुछ कहता है और फिर बाद में उसका श्रेय स्वयं ईश्वर को दिया जाता है, जैसे कि मैथ्यू अध्याय 19 में यीशु ने कहा है। ऐसे उदाहरण भी हैं जहां मनुष्य ईश्वर से बात कर रहा है, जहां यह प्रकट नहीं होता है कि ईश्वर उन्हें बिल्कुल संबोधित कर रहा है, लेकिन यह केवल मनुष्य ही ईश्वर को संबोधित कर रहे हैं। पुराने नियम के स्तोत्र, स्तोत्र उदाहरणों से भरे पड़े हैं।

भजन 103, प्रभु की स्तुति करो, हे मेरी आत्मा, मेरे सारे अंतरतम, उसके पवित्र नाम की स्तुति करो। हे मेरे मन, प्रभु की स्तुति करो, और उसके सभी लाभों को मत भूलो। इस तरह के भजन, और आप किसी के बारे में भी कह सकते हैं, भजनहार की ईश्वर के प्रति स्तुति या विलाप या अन्य प्रकार की अभिव्यक्तियाँ हैं।

यह भजनहार से बात करने वाले परमेश्वर का अभिलेख नहीं है, बल्कि भजनहार द्वारा अपने हृदय को परमेश्वर के सामने प्रकट करने का अभिलेख है। तो यह एक इंसान है जो भगवान से बात कर रहा है। वह परमेश्वर का प्रेरित वचन कैसा है? बाइबिल के अन्य पाठ संकलन या उत्पादन या लेखन की बहुत ही मानवीय प्रक्रियाओं को प्रतिबिंबित करते प्रतीत होते हैं।

अर्थात्, मैं विशेष रूप से बाइबिल के पाठ में मानव लेखक के पिछले लेखन, यहां तक कि धर्मनिरपेक्ष लेखन पर भरोसा करने वाले संदर्भों, स्पष्ट संदर्भों को ध्यान में रखने और इसे स्पष्ट करने के बारे में सोच रहा हूँ। उदाहरण के लिए, मैं कई उदाहरण बता सकता हूँ, लेकिन 2 राजाओं में, और ऐसा कई स्थानों पर होता है, लेकिन 2 राजाओं अध्याय 12 और श्लोक 19। 2 राजा 12, 19, और रिकॉर्डिंग के अंत में इनमें से एक के कारनामे इस्राएल के राजा, श्लोक 19 में, किंग्स के लेखक कहते हैं, योआश के शासनकाल की अन्य घटनाओं के बारे में, और उसने जो कुछ किया, वह क्या यहूदा के राजा के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? मुझे यकीन नहीं है कि वह क्या है, लेकिन जाहिरा तौर पर किंग्स के लेखक एक अन्य स्रोत पर भरोसा कर रहे हैं, जो दिन के दौरान आम रहा होगा, और एक अन्य दस्तावेज़ पर शोध और उपयोग कर रहा है जिसे वह राजाओं के इतिहास कहता है ताकि उपलब्ध कराया जा सके। उनके स्वयं के लिखित कार्य के लिए जानकारी।

आप न्यू टेस्टामेंट में ल्यूक के सुसमाचार, तीसरे सुसमाचार में कुछ ऐसा ही घटित होता हुआ पाते हैं, जहाँ, फिर से, शुरुआत में एक प्रकार के प्रस्तावना प्रकार के कथन में, ल्यूक वास्तव में हमें उन साधनों के बारे में कुछ बताता है जिनके द्वारा उसने इसे तैयार किया था। ल्यूक का सुसमाचार. वह हमें अपने सुसमाचार के कामकाज के बारे में थोड़ा बताता है, और यह कैसे था कि उसने इसे तैयार किया, और यह कैसे अस्तित्व में आया। अध्याय 1, श्लोक 1 से 4 में, कई

लोगों ने उन चीजों का लेखा-जोखा तैयार करने का बीड़ा उठाया है जो हमारे बीच पूरी हुई हैं, जैसे कि वे हमें उन लोगों द्वारा सौंपी गई थीं जो पहले से ही प्रत्यक्षदर्शी और वचन के सेवक थे।

इसलिए, चूंकि मैंने स्वयं शुरू से ही हर चीज की सावधानीपूर्वक जांच की है, इसलिए मुझे आपके लिए सबसे उत्कृष्ट थियोफिलस का एक व्यवस्थित विवरण लिखना भी अच्छा लगा, जो शायद संरक्षक की तरह रहा होगा जिसने ल्यूक के काम और शोध को इसे तैयार करने के लिए वित्त पोषित किया था।, ताकि तुम उन बातों की निश्चितता को जान सको जो तुम्हें सिखाई गई हैं। अब, ध्यान दें कि इस पाठ में क्या चल रहा है। कुछ बातें.

सबसे पहले, ल्यूक काफी हद तक ऐसी भाषा का उपयोग करता है जो ल्यूक से मिलती-जुलती अन्य कथाओं या जीवनी संबंधी कार्यों में आम थी, जैसे कि एक व्यवस्थित विवरण लिखना। इस भाषा का बहुत कुछ अन्य कार्यों से मिलता जुलता है। यह ल्यूक के लिए अद्वितीय नहीं है।

दूसरा, ऐसा प्रतीत होता है कि ल्यूक मसीह के जीवन के अन्य वृत्तांतों से अवगत है। उसकी भाषा पर ध्यान दें, क्योंकि दूसरों ने एक वृत्तांत लिखने का बीड़ा उठाया है। इसलिए ऐसा लगता है कि ल्यूक जागरूक है और दूसरों के काम का उपयोग कर रहा है, चाहे वह मैथ्यू या मार्क जैसे अन्य सुसमाचारों में से एक हो, संभव है, लेकिन ल्यूक हमें यह नहीं बताता कि उसके पास कौन से अन्य संसाधन उपलब्ध थे, लेकिन वह स्पष्ट रूप से है मसीह के जीवन के अन्य वृत्तांतों से अवगत है, और शायद वह उन्हें पूरक करने या शायद उनमें से कुछ को सही करने का इरादा रखता है।

दूसरी बात जो ल्यूक हमें बताता है वह यह है कि वह उन चश्मदीदों और अन्य लोगों के बारे में जानता है जो इन खातों की गवाही देते हैं, और वह उन पर भरोसा भी कर रहा है। तो यह सब एक साथ रखकर, ल्यूक व्याख्या की एक बहुत ही मानवीय प्रक्रिया को प्रकट करता प्रतीत होता है। वास्तव में, यह इतना मानवीय है कि मुझे आश्चर्य है कि क्या इसका कोई उद्देश्य है, हम इसके बारे में किसी अन्य सत्र में थोड़ी देर बाद बात करेंगे, लेकिन ल्यूक की कुछ पांडुलिपियां हैं, इन छंदों में जहां ल्यूक कहते हैं, यह मुझे अच्छा लगा, वहाँ कुछ पांडुलिपियाँ हैं जो पवित्र आत्मा की ओर इशारा करती हैं, जो कि ल्यूक में कहीं और पाया जाने वाला एक वाक्यांश भी है, इसलिए हो

सकता है कि वे इसे उसी से ले रहे हों, लेकिन यह लगभग वैसा ही है जैसे कि कुछ शास्त्रियों ने सोचा हो कि यह भी था मानव, और वे दैवीय मंजूरी जोड़ना चाहते थे, आप जानते हैं, निश्चित रूप से ल्यूक ने इसे अपने आप नहीं लिखा था, यह मुझे अच्छा लगा, लेकिन इसके पीछे दैवीय मंजूरी भी होनी चाहिए।

लेकिन अगर उन दो पांडुलिपियों को जोड़ने में गलती हो, तो हम ल्यूक को उत्पादन की एक बहुत ही मानवीय प्रक्रिया से गुजरने के लिए छोड़ देंगे। वह अन्य स्रोतों पर भरोसा कर रहा है, वह प्रत्यक्षदर्शियों से अवगत है, वह यीशु के जीवन के अन्य वृत्तांतों से अवगत है, और अब उसे थियोफिलस के लिए अपना स्वयं का विवरण लिखना अच्छा लगता है, शायद थियोफिलस के अनुरोध पर। तो ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि ल्यूक अचानक एक दिन चमकने लगा और आत्मा ने उसे बैठने और इसे लिखना शुरू करने के लिए मजबूर महसूस किया, क्योंकि यह एक बहुत ही मानवीय प्रक्रिया का परिणाम लग रहा था, 2 के लेखक की तरह। राजा, राजा के जीवन का अपना विवरण संकलित करने के लिए स्रोतों का उपयोग करते हैं।

तो यह प्रेरित ग्रन्थ कैसा है? प्रेरित रूप में पुराने नए नियम की समझ के साथ यह कैसे फिट बैठता है? एक अन्य प्रकार का साक्ष्य जो हमें पुराने नए नियम में मिलता है, विशेष रूप से यह साक्ष्य, यह उदाहरण नए नियम से आता है, यह दिलचस्प है कि पॉल कभी-कभी अपने शब्दों को भगवान के शब्दों, या मसीह के शब्दों से अलग करता प्रतीत होता है। और कुछ लोगों ने इस पर यह प्रश्न भी उठाया है कि क्या पॉल सोचता है कि वह जो लिखता है वह उसकी अपनी राय है, जो कि मसीह के माध्यम से उसके सामने प्रकट हुई है। 1 कुरिन्थियों अध्याय 7, जहां अध्याय 7 में पॉल कुरिन्थ में चल रही कुछ स्थिति के कारण निर्देशों को संबोधित कर रहा है, और अध्याय 7 आधुनिक पाठक और हमारे इतिहास और संस्कृति और पृष्ठभूमि के बीच मौजूद दूरी का एक और अद्भुत उदाहरण होगा, और प्राचीन पाठ और उसकी संस्कृति और पृष्ठभूमि और इतिहास।

लेकिन पॉल विवाह और तलाक और कामुकता और संयम और विधवापन आदि के आसपास घूमने वाले विभिन्न मुद्दों से संबंधित स्थिति को संबोधित कर रहे हैं और इसके बीच में, वह कुछ दिलचस्प बात कहते हैं क्योंकि वह कुछ लोगों की स्थिति को संबोधित करते हैं जो शायद इस बारे

में सवाल कर रहे हैं कि क्या उन्हें मिलना चाहिए तलाकशुदा है या नहीं, और मैं इस बात के विवरण में नहीं जाऊंगा कि किस बात ने कुछ कुरिन्थियों को ऐसा सोचने के लिए प्रेरित किया होगा। लेकिन श्लोक 10 से 12 में, पॉल कहता है, विवाहितों को मैं यह आदेश देता हूं।

परन्तु वह कहता है, मैं नहीं, परन्तु प्रभु। और फिर यहाँ आदेश है, एक पत्नी को अपने पति से अलग नहीं होना चाहिए, लेकिन यदि वह ऐसा करती है, तो उसे अविवाहित रहना चाहिए या फिर अपने पति से मेल कर लेना चाहिए, और एक पति को अपनी पत्नी को तलाक नहीं देना चाहिए। अब श्लोक 12, बाकी लोगों से मैं यह कहता हूं, लेकिन पॉल यह कहकर इसे योग्य बनाता है, मैं यह कहता हूं, प्रभु नहीं।

और वह यह कहता है, कि यदि किसी भाई की पत्नी विश्वासी न हो, और वह उसके साथ रहने को तैयार हो, तो वह उसे तलाक न दे। और यदि किसी स्त्री का पति अविश्वासी हो, और वह उसके साथ रहना चाहे, तो वह उसे त्याग न दे। तो इस पाठ में क्या चल रहा है? क्या पॉल वास्तव में अपने शब्दों को, जो उसकी अपनी राय है, अलग कर रहा है, जब वह कहता है, मैं यह कहता हूं, प्रभु नहीं, उस चीज़ से जो यीशु के माध्यम से उस पर प्रकट हुई थी, ताकि वह कहे, प्रभु यह कहता है, मैं नहीं? क्या पॉल अपनी खुद की राय को अलग कर रहा है जिसे मसीह के उस शब्द से अधिक हल्के ढंग से लिया जा सकता है जिसे वह अब अपने पाठकों को बताता है? मुझे लगता है कि इस पाठ के लिए संभवतः एक बेहतर व्याख्या है।

इसके बजाय, मुझे लगता है कि पॉल अधिकार के स्तरों में अंतर नहीं कर रहा है, कि किसी तरह अगर मसीह यह कहता है, अगर मसीह ने इसे प्रकट किया है, तो आपको इसका पालन करना चाहिए। लेकिन यह मेरी अपनी राय है, इसलिए आप इसे थोड़े से नमक के साथ ले सकते हैं, या आप यह तय कर सकते हैं कि आप इसके साथ क्या करना चाहते हैं। इसके बजाय, मुझे लगता है कि वह केवल इस बात में अंतर कर रहा है कि उसके शब्दों को यीशु द्वारा सिखाई गई किसी बात में समर्थन मिल सकता है या नहीं।

इसलिए जब श्लोक 10 में, जब पॉल मैरी से कहता है, मैं यह आदेश देता हूँ, मैं नहीं, बल्कि प्रभु, मुझे लगता है कि वह सुसमाचार से यीशु की एक विशिष्ट कहावत का सहारा ले रहा है। आप मैथ्यू, मैथ्यू पाठ, उपदेश ऑन द माउंट, अध्याय 19 में, या मार्क, मार्क के सुसमाचार पर वापस जाएं, जहां वे तलाक के संबंध में यीशु की बातों को दर्ज करते हैं। मुझे लगता है कि पॉल इस पाठ में इसी का जिक्र कर रहा है।

जब हम मत्ती 19 पढ़ते हैं, तो हम तलाक के संबंध में यीशु के निर्देशों का एक भाग पढ़ते हैं। और इसलिए मुझे लगता है कि पॉल, जब वह कहता है, मैं तुम्हें यह आदेश देता हूँ, मैं नहीं, बल्कि प्रभु, तो वह यह नहीं कह रहा है कि यह कुछ ऐसा है जो यीशु ने मुझ पर प्रकट किया है, इसलिए यह उच्च स्तर का अधिकार है। वह बस इतना कह रहा है, मैं सुसमाचारों से, या यीशु की शिक्षाओं की परंपराओं से यीशु के सीधे आदेश की अपील कर सकता हूँ।

लेकिन फिर श्लोक 12 में, जब वह कहता है, बाकियों से, मैं यह कहता हूँ, लेकिन प्रभु नहीं, तो वह यह नहीं कह रहा है कि यह केवल मेरी अपनी राय है। वह बस इतना कह रहा है, जरूरी नहीं कि मेरे पास इसका समर्थन करने के लिए यीशु की कोई बात हो। फिर भी यह दिलचस्प है, अध्याय 7 के अंत में, वह कह सकता है, और मैं भी सोचता हूँ, कि मेरे पास परमेश्वर की आत्मा है।

तो अध्याय 7 की संपूर्णता में, पॉल इस बात से अवगत प्रतीत होता है कि वह जो कह रहा है वह आधिकारिक है और उसका पालन किया जाना चाहिए। वास्तव में, बाद में, अध्याय 14 में, पॉल कहेगा, मूल रूप से कहेगा, कि किसी को भी यह एहसास होना चाहिए कि मैं जो कहता हूँ वह प्रभु की आज्ञा से कम नहीं है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल प्राधिकार के स्तरों में अंतर नहीं कर रहा है, कि वह जो कहता है वह किसी तरह उसकी राय है जिसे कम गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

और इसलिए, यीशु जो कहते हैं वही उन पर प्रकट किया गया है, और उन्हें वह सुनना चाहिए। लेकिन इसके बजाय, मुझे लगता है कि अध्याय 7 में, पॉल बस यह भेद कर रहा है कि क्या वह

यीशु की सांसारिक शिक्षा से यीशु के एक कथन को अपील कर सकता है या नहीं। फिर भी, जब वह ऐसा नहीं कर सकता, तब भी पॉल आश्चर्य है कि उसके पास परमेश्वर की आत्मा है।

और वह ऐसा सन्देश बोलता है जो आधिकारिक है, और वह अपेक्षा करता है कि उसके पाठक उसका पालन करें। एक दूसरा, एक दूसरा नहीं, बल्कि एक और विवरण जो कोई पाता है, एक और घटना जो कोई बाइबिल पाठ में पाता है। फिर से, मैं इसके लिए नए नियम की अपील करता हूं, हालांकि संभवतः आपको पुराने नियम में भी इसी तरह के उदाहरण मिल सकते हैं।

लेकिन यह दिलचस्प है कि जब आप गॉस्पेल पढ़ते हैं, विशेष रूप से मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, तथाकथित सिनॉटिक गॉस्पेल, क्योंकि उनके बीच कुछ साहित्यिक संबंध प्रतीत होते हैं। शब्दांकन, घटनाओं का क्रम, हम इसे बाद में एक अलग सत्र में स्रोत आलोचना के तहत देखेंगे। लेकिन सिनॉटिक गॉस्पेल बिल्कुल वही, कभी-कभी, बिल्कुल वही शब्द, बिल्कुल वही यीशु के बयान दर्ज करते प्रतीत होते हैं।

फिर भी, यह दिलचस्प है कि वे हमेशा यीशु के सटीक शब्दों को रिकॉर्ड करने में रुचि नहीं रखते हैं। तो, उदाहरण के लिए, आप इसे कैसे संभालेंगे? मैथ्यू अध्याय 5 और श्लोक 3 में, यीशु के पहाड़ी उपदेश में तथाकथित आनंदमय शब्दों में से एक, मैथ्यू अध्याय 5 श्लोक 3 में, यीशु कहते हैं, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं। लेकिन ल्यूक अध्याय 6 श्लोक 20 में, ल्यूक के पहाड़ी उपदेश के संस्करण में, आप धन्य हैं, जो गरीब हैं।

अब, मेरी बात, इस बिंदु पर मेरा इरादा इन दोनों के बीच निर्णय लेने या मुद्दे को हल करने का नहीं है, बल्कि केवल यह इंगित करने का है कि उनके शब्द बहुत अलग हैं। मैथ्यू के पास आत्मा में गरीब है, और मैथ्यू के पास यह तीसरे व्यक्ति में है, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं। ल्यूक ने अभी-अभी गरीबों को आशीर्वाद दिया है, और उसके पास यह दूसरे व्यक्ति में है, धन्य हैं आप जो गरीब हैं।

इसके अलावा, अगर यीशु, हालांकि मुझे लगता है कि यीशु शायद त्रिभाषी थे, शायद हिब्रू, अरामी और ग्रीक बोलते थे, अगर यीशु, जैसा कि कई लोग सोचते हैं, यह अरामी भाषा में बोलते थे, तो तथ्य यह है कि ये ग्रीक में दर्ज हैं, यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि हमारे पास ऐसा नहीं है यीशु के सटीक, सटीक शब्द। क्या उनमें से एक ने इसे गलत समझा? क्या मैथ्यू ने आत्मा में गरीब कहकर गलत किया? या क्या ल्यूक ने आत्मा को छोड़कर गलत किया? या, अधिक संभावना है, क्या हमें सुसमाचार लेखकों को यह समझना चाहिए कि वे यीशु के सटीक, सटीक शब्दों को संरक्षित करने के लिए इतने चिंतित नहीं हैं, बल्कि इसके बजाय यीशु ने जो कहा था उसका सटीक सारांश या सटीक विवरण और सारांश तैयार करना चाहते हैं? हां, कभी-कभी वे यीशु ने जो कुछ कहा था, उसे ठीक-ठीक रिकॉर्ड कर सकते हैं, लेकिन अन्य समय में, क्या यह संभव है कि सटीक शब्दों को रिकॉर्ड किए बिना, मैथ्यू और ल्यूक दोनों सटीक रूप से वही प्राप्त कर रहे हैं जो यीशु बोल रहे थे? मुझे लगता है कि हमें इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुंचना होगा, अन्यथा हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि उनमें से एक गलत था। यदि मैथ्यू और ल्यूक यीशु के सटीक शब्दों को संरक्षित करने की कोशिश कर रहे हैं, तो उनमें से एक या दोनों ने इसे गलत पाया।

लेकिन, जैसा कि आम था, हमने फिर कहा, जिन दूरियों का हम अनुभव करते हैं उनमें से एक साहित्यिक दूरी है। पहली शताब्दी में, व्यक्तियों के लिए जो कहा गया था उसका सटीक और पर्याप्त सारांश देना, संक्षेप करना बहुत आम था, जब तक कि यह सटीक रूप से चित्रित करता था कि किसी ने क्या संचार किया था, तो यह ठीक था। ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि वे उद्धरणों में हमारी तरह रुचि रखते थे, जहां आप चारों ओर उद्धरण डालते थे और सटीक, सटीक रीडिंग को संरक्षित करते थे।

इसके बजाय, वे अक्सर एक सटीक सारांश प्रदान करने में अधिक रुचि रखते थे, ताकि मैथ्यू और ल्यूक दोनों इसे सही तरीके से समझ सकें। उन दोनों ने इसका अर्थ और ठीक-ठीक वही समझा जो यीशु संप्रेषित करने का प्रयास कर रहा था। या, एक और दिलचस्प उदाहरण मैथ्यू 5 से 7 में सर्मन ऑन द माउंट है, जो इसका सबसे लंबा संस्करण है।

यदि आपने बैठकर इसे अच्छे अंग्रेजी अनुवाद में पढ़ने के लिए समय निकाला, तो मुझे लगता है कि इसे पढ़ने में शायद 10 या 15 मिनट लगेंगे, कुछ मिनट दें या लें। मुझे गंभीरता से संदेह है कि यीशु ने 10 से 15 मिनट तक पढ़ाया था। अधिक संभावना यह है कि यह शायद एक दिन तक चलता रहा।

लंबा, शायद थोड़ा कम, लेकिन शायद कम से कम दिन का बड़ा हिस्सा। तो, यहां तक कि मैथ्यू 5 से 7 का प्रिय पर्वत उपदेश भी, कभी-कभी, कुछ सटीक शब्दों को पकड़ सकता है, लेकिन अधिक संभावना है, फिर से, एक सटीक सारांश और यीशु ने जो कहा था उसका सटीक चित्रण है। तो, यदि यीशु ने मैथ्यू द्वारा लिखी गई कहानी को स्वयं पढ़ा होता, तो उसने कहा होता, हां, यह वही दर्शाता है जो मैं बता रहा था।

तो, वह परमेश्वर का वचन कैसा है? तथ्य यह है कि हमारे पास नए नियम में, विशेष रूप से गॉस्पेल में, यीशु के शब्दों को रिकॉर्ड करने वाले लेखक हैं जो कभी भी सटीक शब्दों को चित्रित नहीं करते हैं, लेकिन वे संक्षेप में स्वतंत्र महसूस करते हैं, और कभी-कभी वे इसे अलग तरीके से करते हैं। ऐसा लगता है कि मैथ्यू आत्मा में गरीब होने पर जोर देता है, जहां ल्यूक शारीरिक गरीबी पर जोर देता है, और मुझे लगता है, इसमें सामंजस्य बिठाने का एक तरीका है। लेकिन हम इसे परमेश्वर के प्रेरित वचन के रूप में कैसे समझें? आखिरी घटना जो हम पाते हैं, और कई अन्य हैं जिनका हम उल्लेख कर सकते हैं, लेकिन आखिरी घटना जो हमें पुराने नए नियम में मिलती है, वह यह है कि बाइबिल ऐतिहासिक रूप से मोक्ष की व्यवस्था करती प्रतीत होती है।

अर्थात्, बाइबिल को इस तरह से व्यवस्थित किया गया है कि नया नियम पुराने नियम में पिछले रहस्योद्घाटन को ग्रहण करते हुए भी कभी-कभी पूर्णता लाता है, ताकि ईसाई आज इस सवाल पर विचार कर सकें कि हम बलिदान क्यों नहीं देते? जब पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को इसकी आज्ञा दी गई थी, तो यह एक बाइबिल सिद्धांत है, एक बाइबिल आदेश है, फिर भी हममें से अधिकांश लोग आज बलिदान नहीं देते हैं। हममें से अधिकांश सब्त का पालन नहीं करते हैं, जहाँ तक सब्त के दिन उन सभी नियमों का पालन करने की बात है जिनका पालन परमेश्वर की प्रजा इस्राएल ने किया था। ऐसा कैसे है कि वह परमेश्वर का वचन है? तथ्य यह है कि पुराने नियम

में रहस्योद्घाटन के कुछ हिस्से अब लागू नहीं होते हैं, और कभी-कभी यीशु और नए नियम के लेखक उन्हें पलट भी देते हैं, जैसे कि बलि प्रणाली और पुराने नियम के बलिदानों से संबंधित कुछ नियम।

हम इसे परमेश्वर का वचन कैसे समझें? तो, इस सारी जानकारी को ध्यान में रखते हुए, पुराने नए नियम में हमें जो अलग घटना मिलती है, कभी-कभी भगवान सीधे लेखकों से बात करते हैं, कभी-कभी लेखक भगवान से बात करते हैं, जैसे कि भजनहार जब वे प्रशंसा करते हैं, और प्रशंसा की अभिव्यक्तियाँ, और विलाप, और पूजा. कभी-कभी मानव लेखक बोलते हैं, और बाद का लेखक इसका श्रेय ईश्वर को देगा। कभी-कभी हम रचना और उत्पादन की अत्यंत मानवीय प्रक्रियाओं को प्रकट होते देखते हैं।

कभी-कभी हम पाते हैं कि लेखक सटीक शब्दों के बजाय सारांश तैयार करने और संरक्षित करने में रुचि नहीं रखते हैं, और कभी-कभी सारांश भिन्न भी होते हैं। वह परमेश्वर का वचन कैसा है ? और फिर इसे बाइबिल के अपने मेटा-स्टेटमेंट्स से जोड़ते हुए, कि बाइबिल प्रेरित है, या कि बाइबिल भगवान की आत्मा का उत्पाद है, मानव लेखकों को कम से कम 2 टिमोथी में जो कुछ भी उत्पन्न करने के लिए प्रेरित करता है, वह सांस से निकले शब्दों से कम नहीं है ईश्वर की ओर से, ईश्वर की सांस। ऐतिहासिक रूप से, इसे कम से कम चार तरीकों से समझा गया है।

मैं बस उन्हें संक्षेप में सारांशित करूंगा, और फिर जो कुछ भी मुझे लगता है कि इसमें समाहित हो सकता है, या इस साक्ष्य के लिए जिम्मेदार हो सकता है, उसे संप्रेषित करूंगा। सबसे पहले, ऐतिहासिक रूप से, प्रेरणा के चार दृष्टिकोण जिन्होंने इसके साथ संघर्ष किया है। और फिर, इन सभी को देखने के अलग-अलग तरीकों से उप-विचार हो सकते हैं।

यह संपूर्ण नहीं है। कुछ अन्य विचार भी हो सकते हैं जिन्हें जोड़ा जा सकता है, लेकिन मैं बहुत व्यापक ब्रश स्ट्रोक के साथ पेंट करूंगा। एक दृष्टिकोण को अक्सर कट्टरपंथी दृष्टिकोण का नाम दिया गया है, और वह यह है कि भगवान ने वास्तव में पवित्रशास्त्र के शब्दों को निर्देशित किया है।

इसलिए न केवल भविष्यवक्ताओं ने, बल्कि भविष्यवक्ताओं ने, एक अर्थ में, कुछ लोगों ने इसे भविष्यवाणी मॉडल कहा है। भविष्यवक्ता, एक अर्थ में, उत्पत्ति से लेकर रहस्योद्घाटन तक को समझने के लिए मॉडल प्रदान करते हैं। यह वास्तव में ईश्वर द्वारा बाइबिल के लेखक को सीधे शब्दों को निर्देशित करने और बोलने का परिणाम है, जिससे लेखक मूल रूप से एक निष्क्रिय सचिव बन जाता है, जो केवल रिकॉर्डिंग और लेखन करता है, ऐसा प्रभु कहते हैं।

तो भविष्यवाणी, इस प्रकार भगवान कहते हैं, पूरी बाइबिल तक फैली हुई है। इसलिए अतीत में कभी-कभी भगवान को वास्तव में मानव लेखक को पवित्रशास्त्र के शब्दों को निर्देशित करने के रूप में समझा जाता है। इसके ठीक विपरीत एक अन्य दृष्टिकोण उदारवादी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है।

और वह यह है कि बाइबिल की तुलना परमेश्वर के वचन से नहीं की जानी चाहिए। पहला दृष्टिकोण, कट्टरपंथी, बाइबिल पाठ के साथ भगवान के शब्द का एक बहुत ही सख्त समीकरण ढूंढेगा। उदारवादी दृष्टिकोण यह कहेगा कि बाइबिल पाठ की पहचान ईश्वर के वचन से नहीं की जानी चाहिए, बल्कि यह केवल और बड़े पैमाने पर मानव धार्मिक अनुभव का रिकॉर्ड है।

इसकी प्रेरणा को अन्य प्रेरित प्रकार के साहित्य के अनुरूप समझना होगा। तो यह वास्तव में किसी भी अन्य धार्मिक पाठ या किसी अन्य पाठ से अधिक महत्वपूर्ण या कम से कम अधिक आधिकारिक नहीं है। एक और, एक तीसरा दृष्टिकोण, जो एक अर्थ में दूसरे का जवाब देने के लिए है, एक ऐसा दृष्टिकोण था जो अक्सर स्विस धर्मशास्त्री कार्ल बारथ से जुड़ा था, और इसे नव-रूढ़िवादी के रूप में जाना जाता है।

और बारथ ने कहा कि बाइबिल, ईश्वर का लिखित शब्द, ईश्वर के शब्द के बराबर नहीं है, लेकिन यह ईश्वर का वचन बन सकता है। इसे सरल शब्दों में कहें तो, यह ईश्वर का वचन बन सकता है जब ईश्वर रहस्योद्घाटन के इस रिकॉर्ड के माध्यम से अपने लोगों के सामने खुद को प्रकट करना

जारी रखना चाहता है। तो बाइबिल एक गवाह है, अक्सर आप बार्थ या अन्य लोगों को बार्थ पर चर्चा करते हुए पाएंगे, जो बाइबिल को रहस्योद्घाटन के गवाह के रूप में वर्णित करते हैं।

बाइबल ईश्वर के प्रकट होने की गवाह है, लेकिन यह ईश्वर का वचन बन सकती है। यह तब तक जारी रह सकता है जब ईश्वर रहस्योद्घाटन के इस रिकॉर्ड के माध्यम से खुद को हमारे सामने प्रकट करना चाहता है। यह बार्थ की समझ से उपजा है कि ईश्वर पूरी तरह से अलग था, और कोई भी मानवीय भाषा या दस्तावेज़ ईश्वर के रहस्योद्घाटन को प्रकट करने और पकड़ने की उम्मीद नहीं कर सकता है।

तो बाइबल मूल रूप से एक त्रुटिपूर्ण और अचूक मानवीय दस्तावेज़ है, लेकिन यह ईश्वर का शब्द बन सकता है जब ईश्वर अपने रहस्योद्घाटन की इस गवाही के माध्यम से खुद को प्रकट करना जारी रखना चाहता है। चौथे दृष्टिकोण को इस रूप में जाना जाता है, अक्सर बेहतर शब्द की कमी के कारण, मैंने इसे लेबल किया है, और अन्य ने इसे इंजील दृष्टिकोण का लेबल दिया है। और वह बाइबल है, नंबर एक की तरह, नंबर दो और तीन के विपरीत, बाइबल को परमेश्वर के वचन के बराबर माना जाना चाहिए।

लेकिन नंबर एक, कट्टरपंथी दृष्टिकोण के विपरीत, इंजीलवादी दृष्टिकोण यह महसूस करता है कि बाइबिल ईश्वर का शब्द है, लेकिन इसे मानव लेखकों और बहुत ही मानवीय और विविध तरीकों और साधनों के माध्यम से संप्रेषित किया गया है। इसलिए पूरी प्रक्रिया के दौरान भगवान काम पर थे। उदाहरण के लिए, ल्यूक अध्याय एक, जहां ल्यूक अन्य स्रोतों का उपयोग कर रहा है और चश्मदीदों के आधार पर अपना शोध कर रहा है और यीशु के जीवन के अन्य खातों के बारे में जानता है, शायद उनमें से कुछ में कमियां देखता है, और अब अपना खाता लिखने का फैसला करता है।

पूरी प्रक्रिया के दौरान ईश्वर कार्य कर रहा है, ताकि परिणाम कुछ ऐसा हो जो मनुष्य के शब्दों से कम न हो, लेकिन साथ ही, ईश्वर के शब्द से भी कम न हो। इसलिए धर्मग्रंथ का दैवीय उत्पादन, दैवीय भागीदारी, यह तथ्य कि धर्मग्रंथ को ईश्वर के शब्द के रूप में पहचाना जाना है, मानवीय

पहलू को कम नहीं करता है। कुछ लोगों ने इसकी तुलना अवतार से की है, तथ्य यह है कि यीशु एक ही समय में पूरी तरह से भगवान हैं, फिर भी पूरी तरह से मानव हैं, इसे भगवान के अवतार भाषण के रूप में देखा जा सकता है।

यह एक ही समय में, पूरी तरह से भगवान का शब्द है, फिर भी किसी तरह मनुष्य के शब्द हैं। और इसलिए हम धर्मग्रंथों को पढ़ सकते हैं और उन अलग-अलग जोरों को देख सकते हैं जो हम मैथ्यू के पहाड़ी उपदेश और ल्यूक, या पुराने नियम की कथा, और भजन, भगवान की स्तुति की अभिव्यक्ति में चिल्लाने वाले भजनों के बीच देखते हैं। हम संचार और लेखन की अत्यंत मानवीय प्रक्रियाएँ देख सकते हैं।

हम पॉल के ग्रीक को जेम्स या मार्क के ग्रीक से अलग कर सकते हैं। इसलिए एक इंजीलवादी दृष्टिकोण इस बात की पुष्टि करता है कि बाइबल किसी तरह से ईश्वर का वचन है, बिना किसी तरह से पूर्ण मानवीय तत्व को कम किए बिना। आइए मैं संक्षेप में उन दो बाइबिल ग्रंथों पर नजर डालना चाहता हूँ जिन्हें हमने शुरुआत में ही उठाया था, तीमुथियुस 3.16 और 2 पतरस 2.20। तीमुथियुस 3.16, 2 तीमुथियुस 3.16 मार्ग, इन दोनों ग्रंथों के साथ न केवल प्रेरणा की हमारी समझ में उनके योगदान को समझना महत्वपूर्ण है, बल्कि सीमा भी है।

फिर हम इसे समाप्त करेंगे, हम संक्षेप में बताएंगे कि हमारा क्या मतलब है शायद अगले सत्र में। प्रेरणा से हमारा क्या तात्पर्य है? यह व्याख्या और व्याख्याशास्त्र को कैसे प्रभावित करता है? 2 तीमुथियुस 3.16 परिच्छेद के साथ, सभी धर्मग्रंथ ईश्वर-प्रेरित या ईश्वर द्वारा प्रेरित हैं। सबसे पहले, हमने पहले ही उल्लेख किया है कि यद्यपि यह पाठ विस्तार से, शायद कटौती और विस्तार द्वारा, पुराने नए नियम की संपूर्णता पर लागू नहीं हो सकता है, पॉल स्पष्ट है, या कम से कम इस संदर्भ में, वह स्पष्ट है कि जिस धर्मग्रंथ का वह मुख्य रूप से उल्लेख कर रहा है, हालाँकि इसमें सुसमाचार और यीशु की शिक्षाएँ भी शामिल हो सकती हैं, पॉल मुख्य रूप से पुराने नियम का उल्लेख कर रहा है, वह धर्मग्रंथ जो उसके पास आया होगा।

दूसरी बात यह है कि इस पाठ और बाइबिल की हमारी समझ और प्रेरणा में इसके योगदान के बारे में जोर देने के लिए यह है कि यह उत्पाद पर ध्यान केंद्रित करता है और प्रक्रिया पर नहीं। हालाँकि, यह कहता है कि संपूर्ण धर्मग्रंथ, मुख्य रूप से पुराना नियम, ईश्वर-प्रेरित है। यह परमेश्वर की सांस है, परमेश्वर का वचन है।

यह हमें नहीं बताता कि यह ऐसा कैसे करता है या यह कैसे काम करता है। उस प्रश्न का उत्तर देने का एक प्रयास संख्या था, पहला दृष्टिकोण, कट्टरपंथी दृष्टिकोण कि ईश्वर इसे निर्देशित करता है। लेकिन इसके विपरीत बहुत सारे सबूत हैं जो बताते हैं कि ऐसे बहुत कम स्थान हैं जहां, भविष्यवक्ताओं के अलावा, बाइबिल के लेखक भगवान के शब्द बोलने या भगवान उनके माध्यम से अपना शब्द बोलने के बारे में जानते हैं।

लेकिन किस मायने में वे अभी भी प्रेरित हैं? तो सबसे पहले, 2 तीमुथियुस 3.16 उत्पाद पर जोर देता है, कि अंतिम उत्पाद, स्वयं धर्मग्रंथ, स्वयं पाठ, किसी न किसी तरह, ईश्वर का शब्द ही है। उनकी उत्पत्ति ईश्वर की वाणी में है। उनकी उत्पत्ति ईश्वर की वाणी या सांस से हुई है।

फिर भी यह इस बारे में कुछ नहीं कहता कि परमेश्वर यह कैसे करता है। ऐसा कैसे हुआ कि ल्यूक, मसीह के जीवन के अन्य वृत्तांतों को पढ़ते हुए, शायद कुछ कमियों के बारे में जानते थे, अपना खुद का शोध कर रहे थे, उत्पादन करना चाहते थे, थियोफिलस नाम के एक व्यक्ति के जवाब में खुद की इच्छा कर रहे थे, अपना खुद का सुसमाचार लिखना चाहते थे। ऐसा कैसे है कि वही परमेश्वर की सांस और वही शब्द है? 2 तीमुथियुस 3.16 प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है, लेकिन हमें आश्चस्त करता है कि उत्पाद किसी भी चीज़ से कम नहीं है, जबकि अभी भी इंसानों के शब्द हैं, भगवान के शब्द से कुछ भी कम नहीं है।

आखिरी बात जो मैं इस पाठ के बारे में कहना चाहता हूं वह यह है कि प्रेरणा सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि व्यावहारिक और व्यवहारिक है। श्लोक 17 हमें याद दिलाता है कि प्रेरित पाठ कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम सुरक्षित रखने के लिए शेल्फ पर रखते हैं और कहते हैं, देखो, यह ईश्वर का

प्रेरित शब्द है। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं है अगर यह हमारे अस्तित्व तक नहीं पहुंचता है और हमें परिवर्तित नहीं करता है और आज्ञाकारिता पैदा नहीं करता है।

यदि बाइबल वास्तव में ईश्वर का प्रेरित शब्द है, तो हम उसके अनुरूप प्रतिक्रिया देने से बच नहीं सकते। यदि यह परमेश्वर का वचन है, तो यह हमारे ऊपर अधिकार रखता है, और हमें आज्ञाकारिता में जवाब देना चाहिए। अंतिम पाठ, 2 पतरस 2.20 और 2.21, जब लेखक ने कहा कि भविष्यवक्ताओं ने अपनी मर्जी से और अपनी व्याख्या के अनुसार नहीं लिखा, बल्कि वे व्यक्ति थे जो ईश्वर की आत्मा से प्रेरित थे।

फिर से, मुझे लगता है कि हमें इस बात की सीमाओं को समझने की जरूरत है कि पीटर, कम से कम यहां, सभी पाठों को स्पष्ट रूप से संबोधित नहीं करता है। मुझे लगता है कि वह इसे स्पष्ट करते हैं, और यदि आप संदर्भ पढ़ते हैं और समझते हैं कि 2 पतरस में क्या चल रहा है, तो क्या पॉल मुख्य रूप से पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का बचाव कर रहा है, और शायद प्रेरितों का भी, जब वह कहता है कि उन्होंने क्या भविष्यवाणी की थी, जब उन्होंने भविष्यवाणी की गई, यह उनकी अपनी मानवीय इच्छा और मानवीय सरलता और उनकी अपनी व्याख्या का परिणाम नहीं था, बल्कि भविष्यवाणी मनुष्य द्वारा ईश्वर के शब्द को बोलने के लिए ईश्वर की आत्मा से प्रेरित होने के परिणामस्वरूप आई। यद्यपि हम नए नियम की अन्य पुस्तकों को बाहर नहीं करना चाहते हैं, निश्चित रूप से 2 पीटर 2.20, जैसा कि हमारे पास है, मुख्य रूप से भविष्यवाणी साहित्य को संबोधित करता है और इस बारे में कुछ नहीं कहता है कि कथा या कविता या अन्य प्रकार के साहित्य या अन्य ग्रंथों का निर्माण कैसे किया गया था, लेकिन निश्चित रूप से यह समझने के लिए एक सहायक मॉडल प्रदान करता है कि कैसे ईश्वर की आत्मा मनुष्यों के माध्यम से कुछ ऐसा उत्पन्न करने के लिए काम कर सकती है जो मानव लेखक के उत्पाद से कम नहीं है, लेकिन फिर भी, किसी तरह से, उसी समय, शब्द से भी कम नहीं है ईश्वर की और कुछ ऐसा जो स्वयं ईश्वर की सांस का ऋणी है।

यह बाइबिल की व्याख्या को कैसे प्रभावित करता है? सबसे पहले, क्योंकि बाइबल एक मानवीय दस्तावेज़ है, तो आलोचना के विभिन्न तरीकों के बारे में हम बात करने जा रहे हैं, हम बाद में

परिभाषित करेंगे कि आलोचना से हमारा क्या मतलब है। व्याख्या के तरीके, विभिन्न आलोचनाएँ जिन पर हम चर्चा करेंगे, और हम मानवीय समझ का विश्लेषण कैसे करते हैं, वे सभी वैध और आवश्यक हैं क्योंकि हम उन दस्तावेजों के साथ काम कर रहे हैं जो पूरी तरह से मानवीय हैं। वे मानव द्वारा एक विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ में, मानवीय समस्याओं आदि के जवाब में निर्मित किए जाते हैं।

तो उसके कारण, मानवीय आयाम के कारण, यह विभिन्न तरीकों और विभिन्न आलोचनाओं का उपयोग करके मान्य होता है जिनके बारे में हम बात करेंगे। लेकिन दूसरा, क्योंकि ये दस्तावेज़ दिव्य हैं, क्योंकि बाइबल परमेश्वर के वचन से कम नहीं है, इसका हमारे जीवन पर दावा है। यह पालन करने की मांग करता है।

हमें इसके प्रति समर्पण करना चाहिए और इसका पालन करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, ऐतिहासिक पद्धतियाँ हमें बाइबिल पाठ को समझने में उतनी ही दूर तक ले जा सकती हैं, जितनी आवश्यक हो। लेकिन बाइबिल का पाठ भी एक आध्यात्मिक दस्तावेज़ है, और इसके पीछे वह ईश्वर है जिसने इसे प्रेरित किया है, और जो अपने लोगों से संवाद करता है, और जो हमारा ईश्वर बनने की इच्छा रखता है, और चाहता है कि हम अपने लोग बनें।

तो एक आध्यात्मिक पुस्तक के रूप में, एक दिव्य पुस्तक के रूप में, इसका हमारे जीवन पर दावा है, और इसे आज्ञाकारिता की प्रतिक्रिया उत्पन्न करनी चाहिए। तीसरी बात यह है कि पाठ ही हमारी व्याख्यात्मक गतिविधि का केंद्र है और होना ही चाहिए। इसके पीछे की परंपराएं या स्रोत नहीं, बल्कि जितना उपयोगी हो सकता है, और हम आवश्यकता के बारे में बात करेंगे, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दूरी जो अक्सर हमें बाइबिल के पाठ से अलग करती है।

लेकिन अंततः, यह पाठ ही है जो हमारी व्याख्यात्मक गतिविधि का केंद्र है, न कि हमारे पुनर्निर्माण, पुनर्निर्मित ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, या तथाकथित काल्पनिक पुनर्निर्मित स्रोत। लेकिन अंततः, यह तैयार पाठ है, वह उत्पाद है जो हमारी व्याख्यात्मक गतिविधि का ठिकाना या केंद्र है,

भगवान की वाणी के उत्पाद के रूप में, बहुत ही प्रेरित पाठ के रूप में। दूसरी धारणा जिसका मैं बहुत संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं यह मानूंगा कि विहित पुराने और नए नियम, जिसे हम अब स्वीकार करते हैं, विशेष रूप से इंजील विद्वान स्वीकार करते हैं, पुराने नियम की 39 पुस्तकें, और नए नियम की 27 पुस्तकें, ईश्वर के प्रेरित शब्द हैं, या विहित धर्मग्रंथ हैं, जो यीशु और अन्य प्राचीन यहूदी अधिकारियों की गवाही पर आधारित हैं, जो चौथी और पांचवीं शताब्दी ईस्वी के शुरुआती चर्च के साक्ष्य पर आधारित हैं, क्योंकि वे कुशती कर रहे थे और काम कर रहे थे। वे कौन से दस्तावेजों को आधिकारिक धर्मग्रंथ के रूप में स्वीकार करेंगे, और ईश्वर के शब्द के रूप में पहचानेंगे।

उस साक्ष्य के आधार पर, फिर से, हमारी व्याख्यात्मक गतिविधि के स्थान और वस्तु का केंद्र, विहित पुराना और नया नियम होगा। तो इसके साथ, हमने धर्मग्रंथ की उत्पत्ति पर विचार किया है, और यह हमारे व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है, और यह हमारे व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है। अगला कदम जो हम उठाएंगे वह प्रारंभिक है, और वह यह है कि हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि हमारे पास धर्मग्रंथ का प्रेरित पाठ है, या शायद उसके करीब कुछ है? यह प्रक्रिया पाठ आलोचना के रूप में जानी जाती है, और मैं हमारे अगले सत्र में इसके बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ।

लेकिन अब जब हमने ईश्वर के प्रेरित शब्द के रूप में बाइबिल के मूल उत्पादन पर चर्चा की है, तो हम कैसे जानते हैं कि हमारे हाथों में जो है वह वास्तव में ईश्वर का प्रेरित शब्द है? यह पाठ्य आलोचना और अनुवाद के मुद्दों से संबंधित है, जिस पर हम अगले दो सत्रों में बात करेंगे।